(ii) यो नो द्वेषत् पृथिवि यः पृतन्याद्योऽभिदासान्मनसा यो
वधेन।
तं नो भूमे रन्धय पूर्वकृत्वरि॥

(iii) शिलाभूमिरश्मा पांसुः सा भूमिः संधृता धृता।
तस्यै हिरण्य वक्षसे पृथिव्या अकरं नमः॥

(iv) स्य स्यामन्नं ब्रीहियवौ यस्या इमाः पञ्च कृष्टयः।
भूम्यै पर्जन्यपत्न्यै नमोऽस्तु वर्षभेदसे॥ 4×2=8[10]

(ख) भूमिसूक्तस्य प्रथमत्रयोदशमन्त्राणां तात्पर्यार्थं प्रस्तूयताम्।

अथवा

भूमिसूक्तनिहितार्थः ऋषेः मते प्रस्तूयताम्। 8[10]

Roll No. .....

Total No. of Questions : 5] [Total No. of Printed Pages : 4

(2064)

M.A. (CBCS) IInd Semester Examination

9018

SANSKRIT

(वेद)

(Core)

Paper : MSKT-201

Time : 3 Hours] **[Maximum Marks : Regular : 80 / Private : 100**

नोट :- नियमित छात्रों के लिए प्रश्न-पत्र **80** अंकों का है और इतर छात्रों के लिए **100** अंकों पर आधारित है। पाँच प्रश्न ही प्रष्टव्य हैं। प्रथम प्रश्न का समाधान करना अनिवार्य है।

1. अधोलिखितानां संस्कृतगिरा उत्तरं ददत–

(क) वरुणसूक्तस्य ऋषि ?

(ख) सूर्य सूक्ते प्रधानछन्दोनाम किम् ?

(ग) अग्निसूक्तस्य छन्दो-देवता-नाम्नी लिखत।

(घ) कर्मोपसंग्रहार्थक निपातों का नामोल्लेख कीजिए।

(ङ) 'ईशोपनिषद्' में वर्णित 'विद्या' से क्या अभिप्राय है ?

(च) "कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः" इसका अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(छ) तैत्तिरीयोपनिषद् में ओम् की समता किससे की गयी है ?

(ज) तैत्तिरीयोपनिषद् की ब्रह्मानन्दवल्ली की विषयवस्तु पर प्रकाश डालिए। 16[20]

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** सन्दर्भों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(क) इन्द्रिय नित्यं वचनं औदुम्बरायणः। तत्र चतुष्ट्यं नोपपद्यते। अयुगपद् उत्पन्नानां वा शब्दानां इतरेतरोपदेशः।

(ख) अथ निपाताः। उच्चावचेष्वर्थेषु निपतन्ति। अप्युपमार्थे। अपि कर्मोपसंग्रहार्थे। अपि पदपूरणाः।

(ग) तत्र 'नामान्याख्यातजानि' इति शाकटायनः नैरुक्तसमयश्च। 'न सर्वाणि' इति गार्ग्यो वैयाकरणानां चैके।

(घ) 'तिस्रः एव देवता' इति नैरुक्ताः- अग्निः पृथिवीस्थानः, वायुर्वा इन्द्रो वाऽन्तरिक्षस्थानः, सूर्यो द्युस्थानः।

(ङ) अग्निः कस्मात्-अग्रणीर्भवति, अग्रं यज्ञेषु प्रणीयते, अंगं नयति सन्नममानः, अक्नोपनो भवतीति स्थौलाष्ठीविः।

(च) परः सन्निकर्षः संहिता। पद प्रकृतिः संहिता। पदप्रकृतीनि सर्वचरणानां पार्षदानि। 16[20]

3. (क) निम्नलिखित में से किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए–

(i) मन्त्रों की सार्थकता अथवा निरर्थकता सम्बन्धी कौत्स की मान्यता का उल्लेख कीजिए।

(ii) 'तास्त्रिविधाः ऋचः–परोक्षकृताः, प्रत्यक्षकृताः, आध्यात्मिकयश्च'–इस कथन की व्याख्या कीजिए। 8[10]

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** पदों का निर्वचन कीजिए– गो, समुद्र, अन्तरिक्ष, गायत्री, वीर, हिरण्य, आदित्य, निघण्टु। 8[10]

4. (क) निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** मन्त्रों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(i) ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।

(ii) अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्यां रताः॥

(iii) पूषन्नेकर्षे यम सूर्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन्समूह।
तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि॥

(iv) सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयं सह।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्यामृतमश्नुते॥ 8[10]

(ख) निम्नलिखित में से किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए–

(i) ईशोपनिषद् का महत्व प्रतिपादित कीजिए।

(ii) ईशोपनिषद् में वर्णित विद्या और अविद्या को स्पष्ट कीजिए। 8[10]

Roll No. .....

Total No. of Questions : **5]** [Total No. of Printed Pages : **4**

(2064)

M.A. (CBCS) IInd Semester Examination

9020

SANSKRIT

(व्याकरण)

(Core)

Paper : MSKT-203

Time : 3 Hours] **[Maximum Marks : Regular : 80 / Private : 100**

नोट :- सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। सभी के लिए निर्देश साथ में दिए गए हैं।

1. निम्नलिखित आठ वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

(क) 'पद' की परिभाषा लिखिए।

(ख) 'ईदूदेद्विवचनं प्रगृह्यम्' सूत्र को स्पष्ट कीजिए।

(ग) 'शि सर्वनामस्थानम्' से क्या अभिप्राय है ?

(घ) अव्यय को परिभाषित कीजिए।

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** रूपों की सिद्धि कीजिए–

(i) भवन्ति

(ii) आदत्

(iii) जुहोति

(iv) दीव्यति 8[10]

5. (क) निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए–

(i) न गतिहिंसार्थेभ्य:

(ii) हेतुमति च

(iii) न क्ये

(iv) गुणो यङ्लुको: 8[10]

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** रूपों की सिद्धि कीजिए–

(i) पिपठिषति

(ii) पुत्रीयति

(iii) विजयते

(iv) प्रवहति 8[10]

(ङ) 'स्वादिभ्यः श्नुः' सूत्र के अर्थ को स्पष्ट कीजिए।

(च) 'श्नम्' प्रत्यय कहाँ लगता है ?

(छ) 'रामष्टीकते' में सन्धि प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।

(ज) 'यक्' प्रत्यय कहाँ लगता है ? 16[20]

2. (क) निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए–

(i) परः सन्निकर्षः संहिता

(ii) वृद्धिरेचि

(iii) नादिचि

(iv) सम्बुद्धौ च 8[10]

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** रूपों की सिद्धि कीजिए–

(i) उपेन्द्रः

(ii) शिवोऽर्च्यः

(iii) रामाः

(iv) गौरीषु 8[10]

3. (क) निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए–

(i) अतोऽम्

(ii) नहो धः

(iii) अहन्

(iv) सम्प्रसारणाच्च 8[10]

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** रूपों की सिद्धि कीजिए–

(i) कतरत्

(ii) इयम्

(iii) तानि

(iv) हे अनड्वन! 8[10]

4. (क) निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए–

(i) अदिप्रभृतिभ्यः शप्

(ii) हलि च

(iii) ओतः श्यनि

(iv) लः परस्मैपदम् 8[10]

Roll No. ....

Total No. of Questions : 5] [Total No. of Printed Pages : 3

(2064)

M.A. (CBCS) IInd Semester Examination

9021

SANSKRIT

(व्याकरण)

(Core)

Paper : MSKT-204

Time : 3 Hours] [Maximum Marks : Regular : 80, Private : 100

नोट :- सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। सभी के लिए निर्देश साथ में दिए गए हैं।

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए–

(क) निष्ठा का ?

(ख) कृत प्रत्ययः कस्मिन् अर्थे भवति ?

(ग) 'अतिहिमम्' इति पदस्य विग्रहवाक्यं लिखत।

(च) 'शिवादिभ्योऽण्' इति सूत्रस्योदाहरणमेकं लिखत।

Roll No. .....

Total No. of Questions : 5] [Total No. of Printed Pages : 4

(2064)

M.A. (CBCS) IInd Semester Examination

9022

SANSKRIT

[श्रीमद्भगवद्गीता (द्वितीय व सप्तदश अध्याय)]

(GE-I)

Paper : MSKTG

Time : 3 Hours] [Maximum Marks : Regular : 80 / Private : 100

नोट :- सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। सभी के लिए निर्देश साथ में दिए गए हैं।

खण्ड–I

1. अधोलिखित प्रश्नानां उत्तराणि संस्कृतेन लिखत–

(क) श्रीमद्भगवद्गीतायाः प्रणेता कः ?

(ख) महाभारतस्य युद्ध केषां मध्ये अभवत् ?

(ग) शीतोष्णसुखदुःखदाः मात्रास्पर्शाः कीदृशाः सन्ति ?

(घ) पुरुषः स्थितप्रज्ञः कदा भवति ?

(ङ) दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्॥

(च) तदित्यनभिसंधाय फलं यज्ञतपः क्रियाः।
दानक्रियाश्च विविधाः क्रियन्ते मोक्षकांक्षिभिः॥ [4×4=16]

(ङ) सम्मोहात् किं भवति ?

(च) कीदृशः पुरुषः शान्तिमधिगच्छति ?

(छ) कीदृशाः आहाराः सात्विकानां प्रियाः ?

(ज) कतिविधं तपः, कानि च तानि ? [2×8=16]

2. श्रीमद्भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय के वर्ण्य-विषय को लिखिए।

अथवा

श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार स्थितप्रज्ञ के स्वरूप पर प्रकाश डालिए। [16×1=16]

खण्ड—II

3. निम्नलिखित श्लोकों में से किन्हीं **चार** की व्याख्या कीजिए—

(क) न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो, यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः।
यानेव हत्वा न जिजीविषामस्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः॥

(ख) यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ।
समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते॥

(ग) जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि॥

(घ) व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन।
बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम्॥

(ङ) यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥

(च) रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति॥ [4×4=16]

खण्ड—III

4. श्रीमद्भगवद्गीता के आधार पर त्रिविध श्रद्धा का वर्णन कीजिए।

अथवा

श्रीमद्भगवद्गीता के आधार पर त्रिविध दान विषयक विवेचन कीजिए। [16×1=16]

खण्ड—IV

5. निम्नलिखित श्लोकों में से किन्हीं **चार** की व्याख्या कीजिए—

(क) कर्षयन्तः शरीरस्थं भूतग्राममचेतसः।
मां चैवान्तः शरीरस्थं तान्विद्ध्यासुरनिश्चयान्॥

(ख) अफलाकांक्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते।
यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय स सात्विकः॥

(ग) विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम्।
श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते॥

(घ) मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः।
भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते॥